ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 11, Nov 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

मानव विकास सूचकांक एवं राजस्थान की वर्तमान स्थिति का विश्लेषणात्मक विवेचन

डॉ. परविन्द्रजीत सिंह

प्राचार्य

संत श्री प्राणनाथ परनामी पी जी कॉलेज पदमपुर

।

सारां ।

मानव विकास की अवधारणा आर्थिक विकास के अब तक के स्थापित केवल आर्थिक वृद्धि के आयाम के बजाय शिक्षा, स्वास्थ्य और आय के समावेशी एकीकृत विकास की पक्षधर रही है। मानव विकास की व्यूह रचना इंगित करती है कि प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि मानव विकास के लिए आवश्यक शर्त है, पर्याप्त नही। मानव विकास हेतु प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि के साथ स्वास्थ्य, शिक्षा एवं लोगों की बौद्धिक क्षमता का भी विकास होना चाहिए। इस हेतु शिक्षा एवं स्वास्थ्य में निवेश करने की आवश्यकता पर जोर दिया गया। साथ ही परिसम्पत्तियों एवं आय के वितरण में समानता, सुव्यवस्थित सार्वजनिक व्यय तथा विकास की प्रक्रिया में लोगों की भागीदारी को बढ़ाए जाने की भी आवश्यकता महसुस की गई। समसामयिक काल में मानव विकास ने आर्थिक वृद्धि को मानवीय गतिविधियों के केन्द्रीय उद्देश्य से प्रतिस्थापित किया है।

मानव विकास सूचकांक विकास को मापने के सीमित दृष्टिकोण के स्थान पर अब मानव प्रगति एवं मानव को उपलब्ध विकल्पों के आधार पर मापा जाता है। मानव विकास सूचकांक के द्वारा राष्ट्र, राज्य एवं जिला स्तरीय मानव विकास सम्बन्धी उपलब्धियों को मापा जाता है। मानव विकास सूचकांक लोगों की सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के साथ साथ चुनौतियों की पहचान के लिए जेण्डर एवं वंचित वर्गो की स्थिति पर विशेष दृष्टि रखकर शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका एवं महिला विकास का अध्ययन करता है। भोध पत्र में सूचकांक को तैयार करने हेतु सूचकों के आधार पर विकास सूचकांक की गणना कर पिछड़ी हुई पंचायत समिति एवं अन्तिम छोर पर ग्राम पंचायत तक की पहचान करने का प्रयास किया गया है। यह सूचकांक विकास के लिए आने वाले नियोजनों की ओर ध्यान आकृष्ट करेगा तथा विकास के लिए एक नई सोच एवं नई दिशा तय करेगा।

संकेतभाब्द : मानव विकास, मानव विकास सूचकांक, आर्थिक संवृद्धि, आर्थिक विकास।

परिचय

मानव विकास सूचकांक से आ ाय विकास के लिए ऐसे वातावरण के निर्माण से है जिसमें लोग अपनी क्षमताओं में वृद्धि कर उत्पादकता बढ़ा सके एवं अपनी आवश्यकताओं एवं रूचियों के अनुरूप सृजनात्मक जीवनयापन कर सके। इसलिए कहा भी जाता है कि व्यक्ति ही राष्ट्र की वास्तविक पूँजी होते है। मानव विकास लोगों के लिए अवसरों को बढ़ाने, लोगों की स्वतन्त्रता और उनकी क्षमताओं के विस्तार के साथ मानवीय परिस्थितियों में सुधार कर जीवन को बेहतर करता है। मानव विकास का तात्पर्य यह भी है कि कैसे मानव अपने जीवन को समाजोपयोगी एवं मूल्यवान बनाकर अपनी क्षमताओं से स्वयं को राष्ट्र के लिए उपयोगी बना सकता है।

किसी प्रदेश या राष्ट्र की जनता के शारीरिक और मानसिक क्षमताओं के योग को उस प्रदेश या राष्ट्र की मानवीय शक्ति या मानव संसाधन कहा जाता हैं। मानव संसाधन में किसी निश्चित इकाई क्षेत्र में रहने वाली मानव जनसंख्या के सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक, संगठनात्मक, वैज्ञानिक तथा तकनीकी जैसी विशेषताएं सम्मिलित होती हैं। मानव स्वयं भी एक संसाधन हैं जो भाारीरिक एवं मानसिक दोनों ही श्रम द्वारा आर्थिक क्रियाएं करता हैं। मानव प्राकृतिक तत्वों को अपने ज्ञान एवं कौशल द्वारा मूल्यवान संसाधन रूप में तैयार करता है एवं स्वयं भी उपयोग करता हैं। अतः मानव संसाधनों का निर्माता एवं उपभोक्ता दोनों होता हैं।

मानवीय विकास सूचकांक

मानव विकास रिपोर्ट के संस्थापक अर्थशास्त्री श्री महबूब उल हक के अनुसार विकास का बुनियादी उद्देश्य लोगों की रूचियों एवं विकल्पों का विस्तार करना है। सिद्धान्त रूप में ये विकल्प अनन्त हो सकते हैं तथा समय के साथ बदल सकते हैं। मानव विकास लोगों की ज्ञान अभिवृद्धि तक पहुॅच, बेहतर पोषण एवं स्वास्थ्य सेवाएं, अधिक सुरक्षित आजीविका, शारीरिक हिंसा एवं अपराध के विरूद्ध सुरक्षा, संतोषजनक आरामदायक जीवन, राजनैतिक एवं सांस्कृतिक स्वतंत्रता तथा समुदाय की गतिविधियों में भाग लेने की भावना हेतु लोगों को सक्षम बनाकर उन्हें विकल्प उपलब्ध कराना है। विकास का उद्देश्य लोगों के लिए दीर्घ, स्वस्थ और जीवन का आनन्द हेतु अनुकूल माहौल बनाना है।

भारतीय मूल के अर्थशास्त्री श्री अमर्त्य कुमार सेन के अनुसार आर्थिक वृद्वि से यह आवश्यक नही कि सभी लोगो का कल्याण ही हो। उनके अनुसार मानव विकास का मूल उद्देश्य मनुष्यों के पास उपलब्ध विकल्पों को बढ़ाना है। मानव विकास वह है जिसमें लोग अपनी पसन्द का जीवन व्यतीत कर सके और इसके लिए उनके पास समान अवसर उपलब्ध हो एवं उनकी दक्षता का विकास हो। मानव विकास सामान्य उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए मानव की रूचियों, अवसरों तथा क्षमताओं के विस्तार पर बल देता है। मानव विकास एक मुश्त निरन्तर एवं सैद्वान्तिक तौर पर कभी न रूकने वाली प्रक्रिया है।

मानव विकास सूचकांक (HDI) मुख्य रूप से तीन आयामों के समेकित माप को दर्शाते हैः—

1. दीर्घ जीविता— दीर्घायु एवं स्वस्थ जीवन—जिसे जीवन प्रत्याशा के द्वारा मापा जाता है,
2. ज्ञान— शिक्षा को प्रौढ़ साक्षरता एवं संयुक्त सकल विद्यालय नामांकन अनुपात के द्वारा मापा जाता है, और
3. उत्कृष्ट जीवन स्तर— वास्तविक समायोजित की गई प्रति व्यक्ति आय अथवा प्रति व्यक्ति क्रय शक्ति के द्वारा मापा जाता है।

मानवीय विकास सूचकांक की गणना

H.D.I. = 1/3 (आय सूचकांक) + 1/3 (स्वास्थ्य सूचकांक) + 1/3 (शिक्षा सूचकांक)

वैश्विक मानव विकास प्रतिवेदन 2019

वि व के 189 देशों में भारत मानव विकास सूचकांक प्रतिवेदन 2019 के आधार पर 0.640 मूल्य के साथ 130वे स्थान पर रहा है। वि व के 189 दे ों में नार्वे 0.953 मानव विकास सूचकांक मूल्य के साथ सर्वोच्च स्थान पर है जबकि 0.354 मानव विकास सूचकांक मूल्य के साथ नाइजर निम्नतम 189वे स्थान पर रहा है। राजस्थान में हाल के वर्शो में मानव विकास के क्षेत्र में थोड़ी प्रगति हुई है। दे ा के प्रमुख 15 राज्यों में राजस्थान जहॉ वर्श 1995 में 0.432 मानव विकास सूचकांक मूल्य के साथ 22वे स्थान पर था, वहीं वर्श 2017 में 0.621 मानव विकास सूचकांक मूल्य के साथ 20वे स्थान पर आया है। राजस्थान के जिलों में मानव विकास प्रतिवेदन 2019 के अनुसार श्रीगंगानगर जिला प्रथम स्थान पर एवं डूंगरपुर जिला अन्तिम स्थान पर रहा है। श्रीगंगानगर जिले का मानव विकास सूचकांक वर्श 1999 में राज्य में प्रथम स्थान के साथ 0.656 था

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 11, Nov 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

जो वर्श 2008 में प्रथम स्थान के साथ 0.809 हो गया जबकि हनुमानगढ़ जिला 5वे स्थान पर रहा है जैसाकि नीचे तालिका में द ार्या गया है।

तालिका : मानव विकास प्रतिवेदन 2019 अनुसार मानव विकास सूचकांक का तुलनात्मक विवरण

दे ा/राज्य/जिले का नाम	सूचकांक				मानव विकास में रैंक
	शिक्षा	स्वास्थ्य	आय	मानव विकास	
भारत	0.556	0.751	0.627	0.644	130
राजस्थान	0.755	0.735	0.640	0.710	20
श्रीगंगानगर जिला	0.787	0.816	0.825	0.809	1
हनुमानगढ़ जिला	0.765	0.846	0.673	0.761	5

स्त्रोत– राजस्थान मानव विकास प्रतिवेदन 2019.

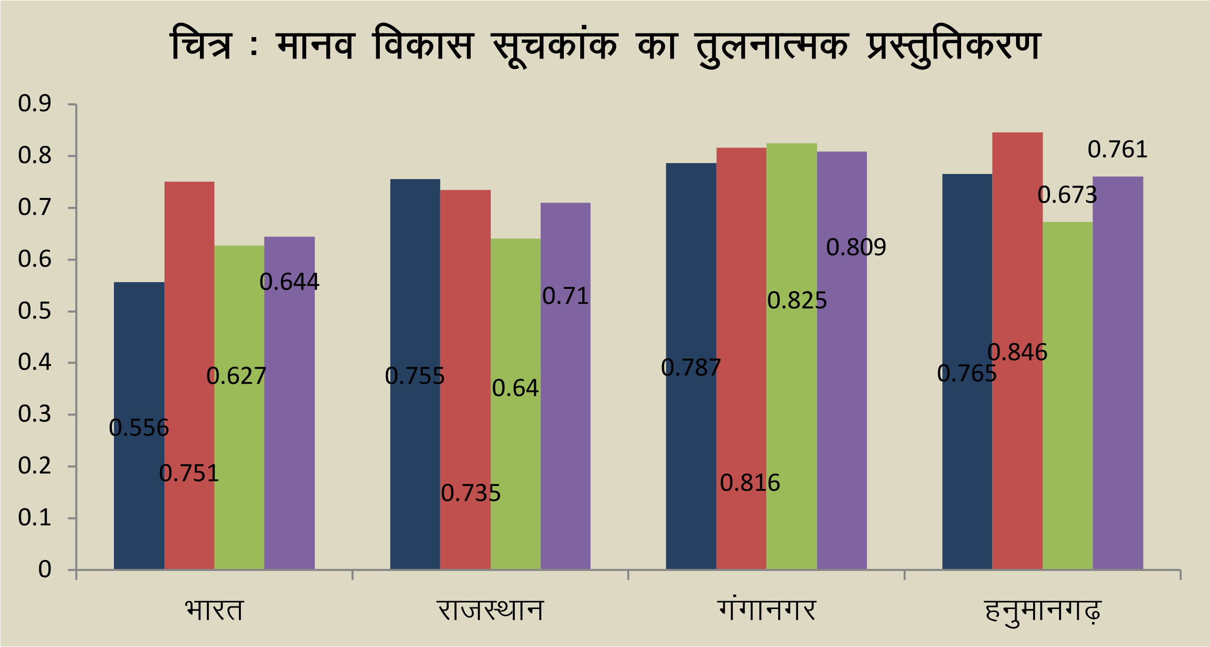

तालिका एवं चित्र के अवलोकन से स्पष्ट है कि श्रीगंगानगर जिले का मानव विकास सूचकांक 2008 के अनुसार 0.809 व हनुमानगढ़ जिले का मानव विकास सूचकांक 0.761 रहा। राजस्थान के जिलों में श्रीगंगानगर का प्रथम एवं हनुमानगढ़ का पांचवा स्थान रहा। सबसे नीचे डूंगरपुर जिला 32वे स्थान पर रहा।

ECONSPEAK: A Journal of Advances in Management IT & Social Sciences,
Vol. 15, Issue 11, Nov 2025 Impact Factor 8.059 ISSN: (2231-4571)
www.skirec.org Email Id: skirec.org@gmail.com

राजस्थान में जन घनत्व की दृष्टि से श्रीगंगानगर जिले का स्थान प्रथम है तथा करौली जिला अन्तिम स्थान पर है। शिक्षा सूचकांक की दृष्टि से राजस्थान में प्रथम स्थान पर कोटा जिला जिसका सूचकांक 0.875 है। श्रीगंगानगर जिला 7वे स्थान एवं हनुमानगढ़ जिला 10वे स्थान पर रहा है। सबसे कम शिक्षा सूचकांक बांसवाड़ा जिले का 0.630 रहा हैं।

स्वास्थ्य सूचकांकों पर दृश्टि डाले तो प्रथम स्थान बीकानेर जिले का रहा जबकि तृतीय स्थान पर हनुमानगढ़ जिला रहा है। श्रीगंगानगर जिले का 5वाँ एवं डूंगरपूर जिले का अन्तिम स्थान रहा है। बीकानेर जिले का स्वास्थ्य सूचकांक 0.863, हनुमानगढ़ जिले का स्वास्थ्य सूचकांक 0.846 हैं, श्रीगंगानगर जिले का स्वास्थ्य सूचकांक 0.787 रहा है। साथ ही राजस्थान में आय का सूचकांक सर्वाधिक श्रीगंगानगर जिले का 0. 825 रहा है और सबसे कम 0.226 चुरू जिले का रहा है। हनुमानगढ़ जिले का आय सूचंकाक 0.673 है के साथ राज्य में 9वाँ स्थान रहा है।

दोनों जिले के समस्त मानवीय सूचकांक के अध्ययन से आर्थिक विकास के स्तर को ज्ञात किया है। आर्थिक विकास मानवीय विकास पर निर्भर करता है। मानव विकास भी आर्थिक विकास पर निर्भर करता है। मानव आर्थिक विकास के लिए जो प्रयास करता है, उनका उद्देश्य देश के लोगों के जीवन स्तर को ऊँचा उठाना है। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में मानव की भूमिका साधन और साध्य दोनों ही रूपों में महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यही जनशक्ति राष्ट्र की सम्पदा है।

चूंकि दोनों जिलों के निवासियों का प्रमुख व्यवसाय कृषि है इसलिए आर्थिक विकास के हेतु कृषि का मजबूत आधार आवश्यक है। आर्थिक विकास के कारण निरन्तर बढ़ती हुई जनसंख्या की खाद्य आवश्यकताओं की पूर्ति हुई है। औद्योगिकरण किसी देश के आर्थिक विकास के लिए एक प्रकार की संजीवनी हैं। उद्योग एवं व्यापार के विकास के द्वारा ही जिले के निवासियों की वास्तविक आय में वृद्धि से निवासियों का आर्थिक स्तर ऊँचा उठा है। जिन राज्यों एवं जिलों की जनसंख्या अधिक है वहां के उत्पादकों को एक स्वाभाविक लाभ होता है। इससे वह अधिक से अधिक वस्तु का उत्पादन करने के लिए प्रोत्साहित होते है परिणामस्वरूप रोजगार तथा राष्ट्रीय आय में वृद्धि का क्रम चलता रहता है।

सारां ा

मानवीय साधनों की सहायता से उत्पति के विभिन्न साधनों में समन्वय स्थापित किया जा सकता है। साथ ही आर्थिक विकास में अन्य साधनों का प्रभावपूर्ण ढंग से उपयोग उसी समय किया जा सकता है जबकि मानवीय साधन योग्यतानुसार एवं उचित ढंग से कार्य कर रहे है। यदि कोई राष्ट्र मानवीय साधनों का विकास करने में समर्थ हैं वो दूसरे क्षेत्र में भी अधिक विकास कर सकेगा। आर्थिक विकास की प्रक्रिया में किसी देश की श्रम शक्ति अपने यहां के भौतिक संसाधनों के उपयोग में सन्निहित रहती है।

आर्थिक विकास में तीन उपलब्धियों की आशा की जाती है।

1. प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि जिससे लोगों के जीवन स्तर उन्नत हो सके।
2. निर्धनता रेखा के नीचे रहने वाली जनसंख्या में कमी।
3. बेरोजगारी की दर एवं आकार में कमी।

आर्थिक विकास में हनुमानगढ़ एवं श्रीगंगानगर जिले खरा उतरा है। श्रीगंगानगर जिले का आर्थिक विकास हनुमानगढ़ जिले की अपेक्षा अधिक रहा है। दोनों जिलों मानव विकास सूचकांक सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति को दर्शाता है एवं चुनौतियों की पहचान के लिए, जेण्डर एवं वंचित वर्गो की स्थिति पर विशेष दृष्टि रखकर, प्रस्तुत सूचकांक में शिक्षा, स्वास्थ्य, आजीविका एवं महिला विकास का अध्ययन किया गया है। सूचकांक को तैयार करने में विभिन्न सूचकों का गहन अध्ययन किया गया है जिससे अब तक की स्थिति तथा चुनौतियों की जानकारी प्राप्त हो सके। उपलब्ध सूचकों के आधार पर विकास सूचकांक की गणना कर पिछडी हुई पंचायत समिति एवं अन्तिम छोर पर ग्राम पंचायत तक की पहचान की गयी है। प्रतिवेदन जिलों के विकास के लिए आने वाले नियोजनों में एक नई पहल तथा आमजन की सामाजिक एवं आर्थिक विकास की चुनौतियों की ओर ध्यान आकृष्ट कर समावे ी विकास के लिए सभी मिलकर अपने–अपने क्षेत्रों में एक नई सोच एवं नई दिशा तय करेंगे।

संदर्भ–

1. आर्थिक सर्वेक्षण 2018, आर्थिक कार्य विभाग, वित्त मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।
2. आर्थिक समीक्षा 2018, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, आयोजना विभाग राजस्थान, जयपुर।
3. मानव विकास प्रतिवेदन, आर्थिक एवं सांख्यिकी निदेशालय, आयोजना विभाग राजस्थान, जयपुर।
4. जिला सांख्यिकी रुपरेखा, जिला सांख्यिकी विभाग, श्रीगंगानगर एवं हनुमानगढ़ जिला।

5. राजस्थान जनगणना वेबसाइट : http://www.rajcensus.gov.in

*****